नाम — जशवन्त सैनी

मो0नं0 — 7388724872

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका

अर्थ सतत विकास –

सतत विकास का अर्थ है कि युवा अपने आगे आने वाली अपनी समन्वय अपने पीढ़ी के लिए वर्तमान में भविष्य के लिए कुछ करें ताकि वह उसका सदुपयोग कर सकें।

उद्देश्य–

सतत विकास का गठन 1972 में किया गया जिसका उद्देश्य युवा WCED द्वारा आने वाली पीढ़ी के लिए करें इसके अपने लिए एक तथ्य प्रस्तुत किया गया।

उपगम–

सतत विकास को अन्य कई नाम से जाना जाता है।

1. पोषणिकविकास।
2. आर्थिक विकास।
3. समन्वयक विकास।
4. सामाजिक विकास।
5. पर्यावरणिक विकास।

सतत विकास समाज की दृष्टि से इन चीजों से मिलकर बना है।

1. समाज
2. पर्यावरण
3. आर्थिक गतिविधि

आर्थिक दृष्टिकोण से भारत में–

आर्थिक दृष्टिकोण से भारत में सतत विकास पोषण को दो रूपों में बांटा गया है।

1. परंपरागत दृष्टिकोण
2. आधुनिक दृष्टिकोण

परंपरागत दृष्टिकोण–

परंपरागत दृष्टिकोण से भारत में मानव विकास में युवाओं के लिए पुराने तरीके से सोचना तथा पुरानी तथ्यों पर विचार करना पुराने समय में युवा देवी देवताओं तथा अन्य पुराने साथियों को मानकर उस में अपना समय खो देते थे वर्तमान में तो कुछ विकास करते परंतु आने वाली पीढ़ी के लिए भी अनेक इमारतों का निर्माण कर गए जैसे ताजमहल पुराने समय में युवा अपनी पीढ़ी के लिए यह इमारत दे गए परंतु वर्तमान में इसकी खूबसूरती कम हो गई।

आधुनिक दृष्टिकोण से सतत विकास के लक्ष्य–

आधुनिक दृष्टिकोण से मनुष्य अपने आने वाली पीढ़ी के लिए अनेक प्रयास कर रहा है ताकि आने वाली पीढ़ी और सतत विकास के लिए स्वास्थ्य का आनंद ले सके।

उप संहार–

सतत विकास का अर्थ है ठोस विकास ऐसा विकास जिसमें युवा पीढ़ी अपनी युवा पीढ़ी के लिए एक ऐसा प्रमाण प्रस्तुत कर जाए जिसमें उसके जीवन में आने वाली पीढ़ी उस का आनंद ले सके किसी देश में सतत विकास वहां की आर्थिक एवं विकसित तथा शिक्षित युवाओं तथा वहां के युवाओं के राज्य की वेशभूषा एवं विकास का अध्ययन कराता है।